सदियों तक दिखेगा असर

सबरीमाला

कोटा नीलिमा

सबरीमाला मंदिर विवाद आज के दौर में एक स्वतंत्र देश के लोगों के औपनिवेशिकरण का द्योतक है। आजादी के आधे हिस्से का दमन और आधे का मनभावन है। महिलाओं के आगे बढ़ने के मौकों का हरण करने और पुरुषों को सुखद अहसास कराने वाला है। यह औपनिवेशकों की भांति आचरण करने वाले पुरुषों द्वारा बनाए गए नियमों और परंपराओं के नाम पर महिलाओं का दमन है। ब्रिटिशकाल और आज जो कुछ भी सबरीमाला में हो रहा है, उसके बीच कोई फर्क है, तो यह है कि आज का यह कार्यकलाप स्वयं भारतीयों द्वारा किया जा रहा है। संभवतः इसलिए कि जब भारत ने ब्रिटिश औपनिवेशिकों से आजादी हासिल की थी, तब पुरुषों को ही वह मिल पाई।

भारतीय महिलाएं तो आज भी इसके इंतजार में हैं। महिलाओं के औपनिवेशीकरण में धर्म महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि धर्मस्थलों पर जो भी परंपराएं और तौर-तरीके प्रचलित हैं, उन्हीं का देश के प्रत्येक घर में अनुसरण होता है। इन परंपराओं और तौरतरीकों को पाखंड में तब्दील होने के लिए धर्म से ही प्रश्रय मिलता है, और फिर इन्हें हर दिन महिलाओं पर थोप दिया जाता है। इससे महिलाओं की समाज में स्थिति नगण्य सी हो रहती है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह कि हर दिन के ये नियम महिलाएं अनुपालित न करें तो उन्हें अपने ही घरों, समुदाय और देश में अस्वीकार्यता की स्थिति का सामना करना पड़ जाता है। देख जा सकता है कि महिलाओं के अधिकार और स्वतंत्रता पुरुष के वर्चस्व वाले सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों से ही उभरते हैं-किसी संविधान या लोकतांत्रिक प्रणाली से नहीं।

सबरीमाला हिंदू धर्म में सुधार का प्रतीक हो सकता था, और भारत में महिलाओं की स्वतंत्रता के आंदोलन की शुरुआत हो सकता था। लेकिन इसके बजाय इसका इस्तेमाल महिलाओं का कुछेक और सदियों तक औपनिवेशिकरण सुनिश्चित करने के लिए हो रहा है। पहले तो यह हो रहा है हिंदू अनुष्ठानों के जरिए। ये अन्य अनेक धर्मों की तरह ही महिलाओं के प्रति कठोर हैं। बताने की जरूरत नहीं है कि कोई भी पूजा पति के साथ न होने पर पूरी नहीं मानी जाती। महिलाओं की माहवारी के दौरान महिलाओं पर कड़े निषेध लागू रखे जाते हैं। ऐसे कि महिलाओं को इस दौरान घर और समुदाय के भीतर ही अलगथलग कर दिया जाता है। विडंबना यह कि इन नियमनिषेधों का ऐसे घरों में भी अनुपालन होता है, जो देवी मां या देवी के अन्य रूपों के आराधक होते हैं। यदि किसी मंदिर ने महिलाओं की समानता का सम्मान किया होता तो ऐसे प्रतिबंध कभी के खत्म हो गए होते। देश में प्रत्येक हिंदू महिला आज हिंदू

पुरुष के बराबर आ गई होती। यही पहला खतरा है जो सबरीमाला आयु वर्ग विशेष की महिलाओं को प्रवेश देने से उठ खड़ा होगा। दूसरा यह हो रहा है कि औपनिवेशिकृत को अपने पर लादे गए औपनिवेश का समर्थन करना ही होगा। इसका पता चलता है कि उनके जीवन पर पुरुष के नियंत्रण को लेकर उनकी चुप्पी से। चुप्पी इसलिए कि उन्हें पितृसत्तात्मक समाज में रहना है। सबरीमाला में महिलाओं के प्रवेश के विरोध खुद कुछ महिलाएं ही आगे निकल आईं।

प्रत्येक नागरिक के पास अपने मुताबिक धर्म अनुपालन का संवैधानिक अधिकार है। लेकिन महिलाएं संविधान प्रदत्त इस अधिकार का लोकतांत्रिक, राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं में पितृसत्तात्मक प्रभाव के कारण इस्तेमाल नहीं कर पातीं। तीसरे यह हो रहा है कि औपनिवेशिकृत को भय के माहौल पर ही रहना चाहिए। केरल में दो महिलाओं के सबरीमाला में प्रवेश को लेकर यही सब कुछ तो हो रहा है। औपनिवेशिक सुनिश्चित कर लेना चाहते हैं कि यह प्रयास व्यापक रूप न अख्तियार कर ले। औपनिवेशीकरण के ऐसे कृत्य का आसानी से विरोध भी नहीं किया जा सकता। और जो मुट्ठी भर महिलाएं विरोध में उतर भी आई हैं उनके लिए गंभीर नतीजों की आशंका उठ खड़ी हुई हैं। यदि वे इस स्वतंत्रता आंदोलन में जीत जाती हैं, तो महिलाओं के लिए समानता का मसला लंबे समय तक नहीं रहने पाएगा। यही तीसरा खतरा है, जो आयु वर्ग विशेष की महिलाओं के मंदिर प्रवेश पर महसूस किया जा रहा है।

चौथी बात यह है कि अपनी आजादी पर आमादा आबादी पर नियंत्रण के लिए औपनिवेशिक वर्ग परंपराओं और नियमों की दुहाई दे रहा है। मंदिर के मामले में तो आराध्य की आड़ ली जा रही है। मान्यता बताई जा रही है कि आराध्य देव माहवारी के दौर से गुजर रहीं महिलाओं और पुरुषों को समान नहीं देखते। यह बनावटी अंतर बनाकर इसे बनाए रखने की कोशिश है। महिलाओं को सबरीमाला में प्रवेश दिया जाता है, तो वार्ता करने की नौबत आ खड़ी होगी और ऐसे तौर-तरीकों पर चर्चा होने लगेगी कि महिलाओं को निषेधों से मुक्ति कैसे मिले। यही सबरीमाला में आयु वर्ग विशेष की महिलाओं को प्रवेश से उठ खड़ा होने वाला खतरा है।

इन तमाम खतरों और अंदेशों के मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने सितम्बर, 2018 में 10 से 50 वर्ष तक की महिलाओं को भी सबरीमाला मंदिर में प्रवेश की अनुमति प्रदान कर दी। यह फैसला संविधान की बुनियाद पर था। संविधान ऐसा दस्तावेज है, जिसे स्वतंत्रता सेनानियों ने तैयार किया था, जो चाहते थे कि ब्रिटिशकाल में भारत जिन मूल्यों से वंचित किया गया था, उन मूल्यों को फिर से स्थापित किया जाएगा। दूसरी तरफ, विरोधाभास यह कि चालीस साल की दो महिलाओं-बिंदू और कनकदुर्गा-के मंदिर प्रवेश के पश्चात बीती 2 जनवरी को मंदिर का शुद्धिकरण किया गया। यह कोशिश थी कि मंदिर प्रवेश पर आमादा महिलाओं का हौसला तोड़ा जाए।

महिलाओं के मंदिर प्रवेश संबंधी फैसले के खिलाफ पुजारियों द्वारा दायर याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट 22 जनवरी को सुनवाई करेगा। उस दिन स्वतंत्रता के मूल्य और परंपरा आमने-सामने होंगे। उम्मीद है कि धर्म और हिंदुत्व के विवेक स्वतंत्रता और परंपरा ऐसे सुधार के रूप में उभरेंगे जिसकी समूचा विश्व सराहना करेगा। लेकिन ऐसा एक ऐसे विश्व में ही हो पाना संभव है, जहां राजनेता न हों। इसलिए कि तमाम औपनिवेशिकरण सत्ता का ही तो खेल है। महिलाओं यानी देश की आधी आबादी पर वर्चस्व कोई ऐसी शै नहीं है जो आसानी से चली जाएगी। जो नेता आज पुरुषों के साथ आ खड़े हुए हैं, उनकी नजर अआने वाले चुनावों पर है। लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि देश की महिलाओं के पास भी मताधिकार है। बहरहाल, यह लैंगिक युद्ध आगम पर असर छोडेगा।

उम्मीद है कि धर्म और हिंदुत्व के विवेक स्वतंत्रता और परंपरा ऐसे सुधार के रूप में उभरेंगे जिसकी समूचा विश्व सराहना करेगा। लेकिन ऐसा एक ऐसे विश्व में ही हो पाना संभव है, जहां राजनेता न हों। इसलिए कि तमाम औपनिवेशिकरण सत्ता का ही तो खेल है। महिलाओं यानी देश की आधी आबादी पर वर्चस्व कोई ऐसी शै नहीं है जो आसानी से चली जाएगी। जो नेता आज पुरुषों के साथ आ खड़े हुए हैं, उनकी नजर अआने वाले चुनावों पर है। लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि देश की महिलाओं के पास भी मताधिकार है

WI

INTRODUCING A NEW RANGE OF PILLOWS MATTRESSES

- Easy on your head & body
- With temperature control & air circulation

BUY NOW

Read The Hindu® e-Paper On
Get a free trial of The Hindu e-pape